Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A Part — II (Hons)
Paper — III
नीतिशास्त्र (Ethics)

1/ "नैतिक तथा नीतिशून्य कर्म"

Notes /

नीतिशास्त्र का लक्ष्य मानव आचरण के उन आदर्शों का निरूपण करना है जिससे मिलान करके किसी कर्म को उचित या अनुचित ठहराया जा सके। किन्तु सभी प्रकार के कर्मों पर नैतिक निर्णय नहीं किया जा सकता। केवल नैतिक कर्मों (Moral actions) का ही नैतिक निर्णय किया जा सकता है।

कर्म भी तीन प्रकार का होता है। नैतिक कर्म (Moral action) नीतिशून्य कर्म (non-moral actions) और अनैतिक कर्म (Immoral actions)

1. नैतिक कर्म (Moral Actions)

नैतिक प्रत्ययों का प्रयोग दो अर्थों में होता है— संकुचित और व्यापक अर्थ। संकुचित अर्थ में सत् अथवा उचित को 'नैतिक' (Moral) कहते हैं और असत् अथवा अनुचित को अनैतिक। नीतिशास्त्र 'नैतिक' प्रत्यय को इस अर्थ में ग्रहण नहीं करता।

बृहत् या व्यापक अर्थ में नैतिक का अर्थ है नैतिक गुण संपन्न। जिन क्रियाओं का नैतिक निर्णय हो सके तथा जिन्हें सत् या असत्, उचित या अनुचित, पाप या पुण्य कहा जा सके, उन्हें नैतिक कर्म (Moral actions) कहते हैं। पी.बी. चटर्जी (P.B. Chatterji) के शब्दों में "नैतिक" शब्द का अर्थ है जिसमें नैतिक गुण (उचित और अनुचित, सत और असत, शुभ और अशुभ) प्रस्तुत हो, अर्थात जो सत् अथवा

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

2

Notes

BOOKS उचित, शुभ या अशुभ को
डी. जी. एन. मिश्र के अनुसार "नीतिशास्त्र
का लक्ष्य है, जिसमें नैतिक शुभ
(उचित या अनुचित) वर्तमान है।"

नैतिक कर्म ऐच्छिक
कर्म (Voluntary action) की कहते हैं।
ऐसा कर्म जो चेतन रूप से इच्छा
या ज्ञान रखके किया जाता है उसे
ऐच्छिक कर्म कहते हैं। इन कर्मों के
संपादन में व्यक्ति का इच्छा-स्वातंत्र्य
(Freedom of will) रहना आवश्यक
है। जब कोई व्यक्ति दबाव (Pressure) में आकर कर्म करता है तब
उसके कर्म को ऐच्छिक कर्म नहीं
कहा जा सकता। ऐसा कर्म नीतिशास्त्र
का विषय नहीं हो सकता। केवल
ऐच्छिक कर्मों (Voluntary actions)
से ही नीतिशास्त्र का संबंध रहता
है। जो ऐच्छिक कर्म नैतिक कर्म है
इनपर नैतिक निर्णय देना नीतिशास्त्र
का लक्ष्य रहता है, जो ऐच्छिक
कर्म नैतिक कर्म है। इनपर नैतिक
निर्णय देना नीति शास्त्र का लक्ष्य रहता
है। जो ऐच्छिक कर्म उचित या
अनुचित शुभ या अशुभ कुछ
भी हो सकते हैं। सत्य बोलना
शुभ है और चोरी करना
अशुभ। यहाँ 'सत्य बोलना'
और 'चोरी करना' दोनों ही
ऐच्छिक क्रियाएँ अर्थात नैतिक
क्रियाएँ हैं।

नैतिक निर्णय
के अंतर्गत सभी ऐच्छिक

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Note!

GRB BOOKS

क्रियाएँ कहा जाती हैं। स्वाभाविक कर्मों का नैतिक निर्णय किया जा सकता है, इन ऐच्छिक कर्मों के अतिरिक्त स्वभाव के अभ्यासजन्य कर्म भी नैतिक कर्म माने जाते हैं। अभ्यास जन्य कर्म वे हैं जो अभ्यास द्वारा किए जाते हैं। इन्हें करने में इच्छा संकल्प या मानसिक द्वंद्व नहीं हो पाता। इस आधार पर इन कर्मों को नैतिक नहीं कहा जा सकता किंतु इन्हें नैतिक माना जाता है। इसका कारण यह बताया जाता है — प्रारंभ में व्यक्ति इच्छा या संकल्प से ही कोई कर्म करना चाहता है। किसी एक ही कर्म को बार-बार करने से वह कर्म बाद में अभ्यास जन्य कर्म बन जाता है। इन कर्मों के प्रारंभ में इच्छा, संकल्प और मानसिक द्वंद्व पाए जाते हैं। इसलिए इन कर्मों को भी नैतिक कर्म के अंदर देखा जाता है। जैसे — कोई व्यक्ति आरंभ में अपनी इच्छा से ही शराब पीना शुरू करता है, किंतु बाद में बार-बार ऐसा करने से वह शराबी हो जाता है और शराब पीना उसका अभ्यासजन्य कर्म बन जाता है। यहाँ उसका यह कर्म (शराब पीना) नैतिक कर्म के अंतर्गत देखा जाता है। इस प्रकार नैतिक कर्म के अंतर्गत दो प्रकार के कर्म आते हैं — ऐच्छिक कर्म (volentary actions) और अभ्यास जन्य कर्म (habitual action)

नैतिक कर्म का एक यह महत्वपूर्ण लक्षण है कि इसका कर्ता (doer) सदैव एक विवेक संपन्न व्यक्ति होना

सुगम पास-बुक

चाहिए। क्रान्तिकारी या पागल के ऐच्छिक और अभ्यास-जन्य कर्म नैतिक नहीं कहे जा सकते और नैतिक निर्णय नहीं हो सकता।

2. नीतिशून्य कर्म (Non-moral Actions) नीतिशून्य कर्म वे हैं जो नैतिक गुणों जैसे - शुभ और अशुभ, सत् और असत्, उचित और अनुचित, पाप और पुण्य, से रहित हैं। इन कर्मों पर नैतिक निर्णय नहीं किया जाता है। पी.बी. चटर्जी के शब्दों में "नीतिशून्य का अर्थ है नैतिक गुण से रहित कर्म, जो नैतिक निर्णय का विषय नहीं है" (The word 'non-moral' means that which is devoid of moral quality). नीतिशून्य कर्मों के विषय में नैतिक औचित्य या अनौचित्य का प्रश्न नहीं उठता। ये कर्म नैतिक माप दण्ड के विषय नहीं कहे जा सकते। जैसे पागलों के कर्म, नीतिशून्य कर्म हैं। संक्षेप में अनैच्छिक कर्मों को ही नीतिशून्य कर्म कहते हैं।

नीतिशून्य कर्म के अनेक मुख्य प्रकार हैं—

(a) निर्जीव पदार्थों (Inanimate things) के कर्म - पर्वत, जाड़ा, गर्मी इत्यादि की क्रियाओं पर नैतिक निर्णय नहीं दिया जा सकता। इनमें इच्छा शक्ति का अभाव रहता है, इसलिए इन्हें नीतिशून्य कर्म कहते हैं।

(b) पौधों या

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

5

Notes

पशुओं के कर्म – इनमें आत्म-चेतना (Self-consciousness) और बुद्धि का अभाव पाया जाता है। अतः इनके द्वारा किसी का जीवन लेना नीतिशून्य कार्य है। इसी प्रकार किसी वृक्ष के गिर जाने से किसी मकान का ध्वस्त हो जाना भी नीति शून्य कर्म हैं। इन कर्मों पर नैतिक निर्णय नहीं किया जा सकता।

(c) अबोध बालकों के कर्म – अबोध बालकों के कर्म प्रेरणा, अभिप्राय, आकलन इत्यादि से वंचित होते हैं। 'इंडियन पेनल कोड' (Indian penal Code) सात वर्ष से कम उम्र के बालकों के अपराध को अपराध नहीं मानता।

(d) पागलों एवं विक्षिप्तों के कर्म – इनके कर्मों के पीछे मानसिक संतुलन का अभाव, चेतना, बुद्धि एवं ज्ञान का भ्रष्ट रहना पाया जाता है। पागल और विक्षिप्त शुभ और अशुभ उचित और अनुचित का भेद नहीं समझते हैं। इसलिए इनके काम नीतिशून्य माने जाते हैं। ये नैतिकता के क्षेत्र से बाहर हैं। इंडियन पेनल कोड में इस बात का समर्थन मिलता है। इसी प्रकार मूर्खों (Idiots) के काम भी नीतिशून्य माने जाते हैं। यदि कोई मूर्ख या पागल किसी की हत्या कर देता है, तो उसे अपराधी नहीं माना जाता। इसके कर्म को नैतिक दृष्टिकोण से उचित या अनुचित नहीं कहा जा

ग्राम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS
GRB BOOKS

GRB BOOKS

Notes

सकता।

(e) मनुष्यों की प्रतिवर्त क्रियाएँ - ये वे हैं जिन्हें व्यक्ति बिना सोचे-समझे सहज रूप से करता है। छींकना, जम्हाई लेना, आँखों की पलकें गिरना, इत्यादि इसी प्रकार की क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं के संपादन में व्यक्ति को संकल्प करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। ये क्रियाएँ स्वयं सहज रूप से होती रहती हैं। इन क्रियाओं को नैतिक निर्णय के बाहर रखा गया है।

(f) अनियमित क्रियाएँ (Random Action) — ये क्रियाएँ आकस्मिक (accidental) क्रियाएँ हैं। इन्हें करने के लिए व्यक्ति को न तो संकल्प करना पड़ता है और न परिश्रम। ये कर्म व्यक्ति द्वारा यों ही आकस्मिक रूप से होते हैं। जैसे - हाथ से शीशा छूटकर नीचे गिरना और फूट जाना। इसके लिए कर्ता को दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

(g) सहज क्रियाएँ (Instinctive Actions) — ये क्रियाएँ नीति शून्य हैं। इनपर नैतिक निर्णय नहीं किया जा सकता। जैसे - सिंह को अचानक देखकर भयभीत हो जाना, शोकपूर्ण दृश्य देखकर आँखों में आँसू आ जाना, ये सहज क्रियाएँ हैं।

(h) विचार प्रवाहित क्रियाएँ — (Ideo-motor Actions) —

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

क्रियाओं को स्वतन्त्र रूप से किया जाता या प्रकार का नहीं है। इन क्रियाओं पर नैतिक निर्णय नहीं किया जा सकता ये नीतिशून्य कर्म हैं।

(J) दबाव (Pressure) या बाध्यता (compulsion) के वशीभूत होकर किए गए कर्म - ये कर्म भी नीतिशून्य हैं। जैसे - किसी व्यक्ति को पिस्तौल दिखाकर उससे कोई अनुचित काम कराना। इस व्यक्ति का कार्य नीतिशून्य है क्योंकि वह स्वेच्छा से नहीं बल्कि पिस्तौल के डर से वैसा काम करता है। इस प्रकार के कर्मों में इच्छा, संकल्प, स्वतंत्रता का कोई स्थान नहीं है, इसलिए इन्हें नीतिशून्य (Non-moral) कहा जाता है।

(J) सम्मोहित अवस्था में किए गए कर्म - जब कोई व्यक्ति सम्मोहित अवस्था में कोई कर्म करता है तब उस कर्म में उसका अपना संकल्प नहीं रहता, वह तो सम्मोहक द्वारा दिए गए आदेशों का यंत्रवत पालन करता है। यहाँ कर्ता को न तो चेतना रहती है न उसकी स्वतंत्र इच्छा रहती है और न उसे उचित या अनुचित भावनाओं का ज्ञान रहता है।

(K) समाज पर असर न करनेवाले कर्म - व्यक्ति समाज का अंग है। यदि कोई व्यक्ति समाज से बिल्कुल पृथक हो, तो उसे सही अर्थ में व्यक्ति नहीं कहा जा सकता और उसके कर्मों पर नैतिक निर्णय भी नहीं किया जा सकता।

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS